दैनिक भारत कि

तामीर

संपादक - काझी मकदूम शफीउद्दीन hinditameer@gmail.com

Editor in chief- Qazi makhdoom shafiuddin

बीड (महाराष्ट्र) वर्ष-२ ला अंक-१० वा सोमवार १ सितम्बर २०२५ RNI TITLE CODE:MAHHIN11405/120/1/3/2024 किमत : २ रूपये पन्ने - ४

मुंबई पर मराठा आंदोलन: मनोज जरांगे पाटिल के नेतृत्व में यल्गार और हैदराबाद निज़ाम के रिकॉर्ड का महत्व

लेखक: क़ाज़ी मखदूम

मुंबई: महाराष्ट्र की सामाजिक और राजनीतिक ज़मीन पर एक बार फिर मराठा आरक्षण की लहर उठ रही है, और इसकी अगुआई बीड ज़िले के गेवराई तालुका के मनोज जरांगे पाटिल कर रहे हैं। यह यल्गार (आंदोलन) मुंबई को ठप कर चुका है, जहां हज़ारों मराठा समर्थक आज़ाद मैदान में जमा हुए हैं। मनोज जरांगे पाटिल की भूख हड़ताल तीसरे दिन में प्रवेश कर चुकी है। यह आंदोलन केवल एक राजनीतिक मांग नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक जड़ों से जुड़ा हुआ है, जिसमें हैदराबाद की निज़ाम सरकार के पुराने रिकॉर्ड्स को आधार बनाया जा रहा है। आइए, समझते हैं कि यह सब क्यों और किस लिए हो रहा है।

मनोज जरांगे पाटिल का नेतृत्व और बीड का पृष्ठभूमि

मराठा नेता मनोज जरांगे पाटिल मराठवाड़ा के बीड ज़िले से हैं, जो १७ सितंबर १९४८ से पहले हैदराबाद की आसफ जाही निज़ाम सल्तनत का हिस्सा था। उस समय मराठा समुदाय को कुणबी के रूप में दर्ज किया जाता था। जरांगे पाटिल की अगुआई में २०२३ से शुरू हुई यह तहरीक मराठा समुदाय को ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) में शामिल करने की मांग कर रही है। उनका दावा है कि मराठा और कुणबी एक ही हैं, और ऐतिहासिक रिकॉर्ड इसकी पुष्टि करते हैं।

बीड ज़िले में पिछले साल उर्दू शिक्षकों को नियुक्त किया गया था ताकि निज़ाम काल के उर्दू और मोडी लिपि में लिखे रिकॉर्ड्स का मराठी में अनुवाद किया जा सके। ये रिकॉर्ड्स राजस्व, जनगणना, और खेती से जुड़े दस्तावेज़ हैं, जो मराठा परिवारों को कृषि-आधारित और पिछड़े समुदाय के रूप में दर्शाते हैं। जरांगे पाटिल का नेतृत्व इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वे मराठवाड़ा के मराठा समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहां बेरोज़गारी, कृषि संकट, और सामाजिक अन्याय की शिकायतें आम हैं। उनकी तहरीक ने लाखों लोगों को एकजुट किया है, और उन्होंने सरकार को चेतावनी दी है कि अगर मांगें नहीं मानी गईं, तो वे पीछे नहीं हटेंगे, चाहे गोली ही क्यों न चलानी पड़े।

अतिरिक्त जानकारी: मराठवाड़ा क्षेत्र, विशेष रूप से बीड, ऐतिहासिक रूप से सामाजिक और आर्थिक रूप से कमज़ोर रहा है। यहां की मराठा आबादी मुख्य रूप से खेती पर निर्भर है, और सूखा, कर्ज़, और सरकारी नीतियों की कमी ने इस समुदाय को और हाशिए पर धकेल दिया है। जरांगे पाटिल की तहरीक ने न केवल मराठा समुदाय को एकजुट किया है, बल्कि युवाओं और किसानों में भी एक नई जागरूकता पैदा की है।

मुंबई पर यल्गार: आंदोलन की तीव्रता और प्रभाव

२९ अगस्त २०२५ को शुरू हुआ यह आंदोलन मुंबई के आज़ाद मैदान में पहुंचा, जहां जरांगे पाटिल ने अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू की। हज़ारों समर्थकों ने शहर को ठप कर दिया, सड़कें बंद हो गईं, ट्रैफिक जाम हो गया, और दैनिक जीवन प्रभावित हुआ। छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस (सीएसटी) के आसपास इतनी भीड़ थी कि ट्रेनें और बसें रुक गईं। प्रदर्शनकारी नहाने, खाना बनाने, और नाचने जैसी गतिविधियों में भी शामिल रहे, जिससे आंदोलन का उत्साहपूर्ण माहौल दिखा।

मुंबई पुलिस ने ३१ अगस्त तक आंदोलन की अनुमति दी है, लेकिन सरकार के साथ बातचीत विफल रही है। उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और देवेंद्र फडणवीस ने मराठा समुदाय को न्याय का आश्वासन दिया है, लेकिन जरांगे पाटिल का कहना है कि मराठा समुदाय को २७% ओबीसी कोटे में शामिल किया जाए, न कि अलग से १०% आरक्षण दिया जाए।

यह यल्गार इसलिए है क्योंकि मराठा समुदाय को लगता है कि उनके साथ अन्याय हो रहा है। वे शिक्षा, नौकरियों, और राजनीतिक प्रतिनिधित्व में आरक्षण चाहते हैं। मुंबई को ठप करना सरकार पर दबाव डालने का एक तरीका है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी हस्तक्षेप किया है और जरांगे पाटिल से भूख हड़ताल खत्म करने की अपील की है।

अतिरिक्त जानकारी: यह आंदोलन महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संतुलन पर गहरा प्रभाव डाल रहा है। मुंबई, जो भारत की आर्थिक राजधानी है, में इस तरह के बड़े पैमाने पर आंदोलन से व्यापार, परिवहन, और पर्यटन प्रभावित हो रहे हैं। साथ ही, यह आंदोलन अन्य समुदायों, विशेष रूप से ओबीसी समुदाय, के साथ तनाव को भी बढ़ा रहा है, जो मराठा आरक्षण का विरोध कर रहे हैं।

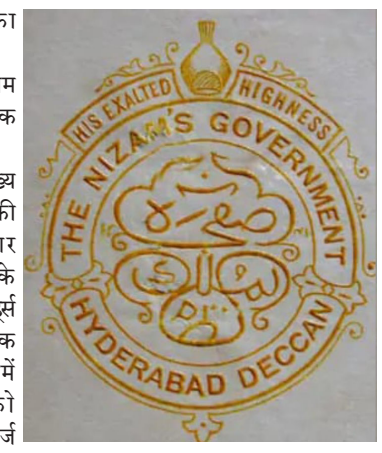

हैदराबाद निज़ाम का उल्लेख: ऐतिहासिक आधार और महत्व

आंदोलन का मुख्य आधार हैदराबाद की निज़ाम सरकार (१७२४-१९४८) के रिकॉर्ड्स हैं। ये रिकॉर्ड्स ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के हैं, जिनमें मराठा समुदाय को कुणबी के रूप में दर्ज किया गया था। निज़ाम के शासन में मराठवाड़ा के ज़िले, जैसे बीड, सल्तनत का हिस्सा थे, और रिकॉर्ड्स उर्दू और मोडी लिपि में लिखे गए थे। जरांगे पाटिल इन रिकॉर्ड्स का हवाला देते हैं ताकि यह साबित कर सकें कि मराठा समुदाय ऐतिहासिक रूप से पिछड़ा वर्ग है, जो उन्हें ओबीसी आरक्षण का हकदार बनाता है। प्रसिद्ध लेखक विश्वास पाटिल का कहना है कि ब्रिटिश काल के ४० साल पुराने रिकॉर्ड्स को खारिज नहीं किया जा सकता, क्योंकि प्रथम योजना आयोग और अनुसूचित जाति आयोग ने भी इन्हें विश्वसनीय माना था। इन रिकॉर्ड्स पर लगी आसफ जाही मुहर उनकी प्रामाणिकता की गारंटी देती थी। यह उल्लेख इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि महाराष्ट्र सरकार ने एक समिति गठित की है जो इन रिकॉर्ड्स की जांच कर रही है और मराठवाड़ा के मराठा व्यक्तियों को कुणबी प्रमाणपत्र देने का वादा किया है। हालांकि, जरांगे पाटिल की मांग है कि सभी मराठा समुदाय को इसमें शामिल किया जाए, न कि केवल पारिवारिक सबूत वालों को।

निज़ाम के रिकॉर्ड्स न केवल मराठा समुदाय के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि हैदराबाद की निज़ाम सरकार में विभिन्न समुदायों को उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के आधार पर दर्ज किया जाता था। ये रिकॉर्ड्स आज के सामाजिक न्याय की लड़ाई में एक मज़बूत आधार प्रदान करते हैं।

आंदोलन का महत्व और भविष्य यह तहरीक सामाजिक न्याय की लड़ाई है, जिसमें ऐतिहासिक अन्याय को सुधारने की कोशिश की जा रही है। अगर सरकार इन रिकॉर्ड्स को ध्यान में रखती है, तो मराठा समुदाय को २७% ओबीसी कोटे में शामिल किया जा सकता है, जो उनकी शिक्षा और नौकरियों में मदद करेगा। हालांकि, ओबीसी समुदाय का विरोध और कानूनी अड़चनें इस रास्ते में बाधा हैं।

यह आंदोलन महाराष्ट्र की राजनीति को बदल सकता है, खासकर दीवाली के बाद होने वाले निगम, ज़िला परिषद, नगर परिषद, और पंचायत चुनावों में। मराठा फैक्टर इन चुनावों में अहम भूमिका निभा सकता है। जरांगे पाटिल के नेतृत्व ने मराठा समुदाय को एकजुट किया है, और मुंबई का यल्गार सरकार को समाधान निकालने के लिए मजबूर कर रहा है। हैदराबाद निज़ाम के रिकॉर्ड्स न केवल ऐतिहासिक हैं, बल्कि आज की सामाजिक वास्तविकता को बदलने की कुंजी भी हैं। यह भी एक सबूत है कि निज़ाम सरकार सांप्रदायिक नहीं थी।

पर्यवेक्षकों का मानना है कि अगर बातचीत सफल रही, तो शांति स्थापित हो सकती है, वरना यह लहर और फैल सकती है। मराठा समुदाय की यह लड़ाई केवल आरक्षण की नहीं, बल्कि सामाजिक और वर्गीय तनाव की ओर बढ़ रही है। ओबीसी समुदाय भी उतनी ही ताकत से जरांगे पाटिल का विरोध कर रहा है, और यह टकराव महाराष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक सेहत के लिए खतरनाक हो सकता है।

यह आंदोलन मराठा समुदाय की सामाजिक और आर्थिक उन्नति की मांग को दर्शाता है। जरांगे पाटिल का नेतृत्व और निज़ाम के रिकॉर्ड्स इस तहरीक को ऐतिहासिक और समकालीन दोनों दृष्टिकोणों से मज़बूत बनाते हैं। सरकार के लिए यह एक चुनौती है कि वह ओ बी सी समाज को नाराज न करते हुए संतुलन बनाए और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करे, वरना यह आंदोलन और उग्र हो सकता है।

मुंबई से विजयी यात्रा निकलेगी या मेरी अंतिम यात्रा : जरांगे पाटील का सरकार को अल्टीमेटम

छायाः इम्तियाज शेख

जमीर काज़ी

मुंबई :

मराठा आरक्षण के मुद्दे पर राज्य सरकार जानबूझकर टालमटोल कर रही है। लेकिन हम आरक्षण लिए बिना पीछे हटने वाले नहीं हैं। या तो यहां से विजयी यात्रा निकलेगी या फिर मेरी अंतिम यात्रा निकलेगी। यह सख्त चेतावनी मराठा संघर्ष योद्धा मनोज जरांगे पाटील ने रविवार को सरकार को दी। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और विवादित मंत्री नितेश राणे पर बेहद तीखे शब्दों में हमला बोला।

मराठा आंदोलन का दायरा बढ़ते देख राज्य सरकार ने भी अब युद्धस्तर पर तैयारी शुरू कर दी है। आंदोलन के तीसरे दिन मराठा आरक्षण उपसमिति ने रविवार को महाधिवक्ता बिरेंद्र सराफ के साथ दो चरणों में बैठक की। इसमें पूर्व न्यायमूर्ति संदीप शिंदे और अधिकारी विजय सूर्यवंशी ने आंदोलन स्थल पर जाकर जरांगे की मांगों की जानकारी समिति को दी। समिति अध्यक्ष राधाकृष्ण विखे-पाटील ने इस पर महाधिवक्ता से चर्चा की।

हैदराबाद और सातारा गजट के आधार पर मराठाओं को कुणबी घोषित करने के कानूनी पहलुओं की जांच की जा रही है। इसी दौरान जब एनसीपी सांसद सुप्रिया सुले आंदोलन स्थल का दौरा कर लौट रही थीं तो कुछ कार्यकर्ताओं ने उन्हें घेर लिया, जिससे थोड़ी देर अफरातफरी मच गई। इस पृष्ठभूमि में जरांगे पाटील ने शाम को साढ़े सात बजे मीडिया से बातचीत कर अपनी भूमिका स्पष्ट की।

जरांगे पाटील ने कहा, मुख्यमंत्री फडणवीस गिरगिट की तरह हैं। विपक्ष में रहते हुए एक बात करते थे और सत्ता में आने के बाद दूसरी। हैदराबाद और सातारा गजट में ५८ लाख मराठा कुणबी के रिकॉर्ड मिले हैं। उसी आधार पर सरकार को तुरंत निर्णय लेना चाहिए, अन्यथा इसका असर प्रधानमंत्री मोदी और अमित शाह तक को पूरे देश में भुगतना पड़ेगा। सरकार टालमटोल कर रही है, लेकिन मैं साफ कहता हूं कि आरक्षण लिए बिना मैं मैदान से नहीं उठूंगा। एक तरफ मुंबई से विजयी यात्रा निकलेगी या फिर मेरी अंतिम यात्रा।''

जरांगे ने आंदोलनकारियों से अपील की कि मंच पर आने वाले अतिथियों को सम्मान दें और आंदोलन को किसी भी तरह से कलंकित न होने दें। साथ ही सोमवार से आंदोलन और अधिक तीव्र करने की चेतावनी भी दी।

कानूनी पहलुओं की जांच जारी : विखे-पाटील

उपसमिति अध्यक्ष राधाकृष्ण विखे-पाटील ने कहा कि हैदराबाद व सातारा गजट, कुणबी के रिकॉर्ड और सर्वोच्च न्यायालय के आपत्तियों को ध्यान में रखते हुए कानूनी पहलुओं की जांच की जा रही है। इसके बाद ही प्रस्ताव तैयार किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि रविवार को मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने दोनों उपमुख्यमंत्रियों को मुंबई बुलाकर स्थिति की समीक्षा की। इसके बाद उनकी अध्यक्षता में समिति की बैठक हुई।

विखे-पाटील ने कहा, बैठक में इस बात पर चर्चा हुई कि गजटियर को लागू करने के लिए क्या प्रक्रिया अपनानी होगी और उसमें क्या कमियां हैं। नंबर्स और रिकॉर्ड की गहन छानबीन करनी पड़ेगी। गांव, तालुका और जिला स्तर पर छाननी से प्रक्रिया तेज हो सकती है। महाधिवक्ता और न्यायमूर्ति शिंदे का मार्गदर्शन लिया गया है। सरकार का कोई भी निर्णय सर्वोच्च न्यायालय की कसौटी पर टिकना चाहिए। इसी दायरे में जरांगे पाटील की मांगों को आगे ले जाने के लिए हम कानूनी सलाहकारों से निरंतर मार्गदर्शन ले रहे हैं।''

विखे-पाटील ने जरांगे से सहयोग की अपील करते हुए कहा कि अगर उनके पास भी कोई कानूनी विशेषज्ञ हों तो उन्हें समिति और महाधिवक्ता से चर्चा के लिए बुलाया जा सकता है। हमने इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाया है। सरकार की तरफ से गंभीर प्रयास जारी हैं और इसके लिए समय की आवश्यकता है।''

उर्दू दैनिक तामीर के २५ वे साल में क़दम रखने पर एक और पेशकश

मनोज जरांगे आज से पानी पीना भी बंद करेंगे

आरक्षण पर तुरंत निर्णय लें : सरकार को अल्टीमेटम

जमीर काज़ी
मुंबई :

मराठा आरक्षण के लिए पिछले तीन दिनों से जारी आंदोलन अब और अधिक तीव्र होने जा रहा है। यह भीड़ नहीं, बल्कि मराठों की पीड़ा है, ऐसा कड़ा संदेश मनोज जरांगे पाटील ने रविवार को दिया। उन्होंने घोषणा की कि सोमवार से वे पानी भी नहीं पिएंगे और उनका आमरण अनशन और सख्त रूप लेगा। जब तक आरक्षण नहीं मिलता, तब तक वे पीछे नहीं हटेंगे।

जरांगे को समर्थन देने के लिए राज्यभर से हजारों मराठा समाज के लोग मुंबई में डेरा डाले हुए हैं। आरक्षण के मुद्दे पर माहौल गरमाते हुए रविवार को आंदोलनकारियों ने सीएसएमटी स्टेशन परिसर, गेटवे ऑफ इंडिया और मरीन लाइन्स समुद्र किनारे पर सरकार के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया।

सुबह इतिहासकारों से चर्चा के बाद मीडिया से बातचीत करते हुए जरांगे ने राज्य सरकार और कुछ नेताओं पर सीधे आरोप लगाए। उन्होंने कहा, ट्रक भरकर खाना सीधे आज़ाद मैदान में मत लाओ। हम यहां अनशन पर बैठे हैं। अन्नछत्र के नाम पर कोई भी पैसा न कमाए। यह आंदोलन पवित्र है, इसे व्यवसाय का साधन न बनाया जाए।

जरांगे ने साफ कहा कि मुंबई में कोई भीड़ नहीं है, बल्कि मराठों का आक्रोश और वेदना है। यह आंदोलन किसी राजनीतिक ताकत का नहीं बल्कि अन्याय के खिलाफ समाज की चीख है। उन्होंने अपील की कि महाराष्ट्र का कोई भी मराठा किसी को पैसे न दे और स्वार्थी लोग इस आंदोलन से दूर रहें।

उन्होंने आंदोलन के स्वरूप में बड़ा बदलाव घोषित करते हुए कहा, कल से मैं पानी पीना बंद करूंगा। आमरण अनशन और कठोर रूप से शुरू होगा। अब किसी भी परिस्थिति में पीछे नहीं हटने वाला हूं।

जरांगे ने दृढ़ निश्चय जताते हुए कहा, किसी भी तरह हमें आरक्षण लेना ही है। जब तक नहीं मिलेगा, मुंबई छोड़कर नहीं जाऊंगा। सरकार को अब समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। साथ ही समाज को संयम बरतने की अपील भी की। उन्होंने कहा, मराठा समाज के युवाओं ने कहीं भी पथराव न करें, शांत रहें। हमारा आंदोलन अहिंसात्मक है और वैसा ही रहना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि मंत्री चंद्रकांत पाटील को अब मराठा विषय पर बोलने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि उनकी वजह से ही मुख्यमंत्री के आदेश पर जाति-पड़ताळनी का काम रोक दिया गया था। जरांगे ने

मुंबई का मुसलमान, मराठा समाज का मेज़बान।

काझी अमान/बीड

मराठा समाज के आरक्षण के लिए संघर्ष योद्धा मनोज जरांगे पाटील द्वारा आजाद मैदान पर शुरू किए गए ऐतिहासिक आंदोलन के कारण मुंबई में चक्काजाम हो गया, जिससे महाराष्ट्र हिल गया है और सरकार के होश उड़ गए हैं। इस आंदोलन को सफल न होने देने के लिए सरकार ने आंदोलन स्थल पर भोजन, पानी और शौचालय की असुविधा पैदा कर मराठों की एक तरह से नाकेबंदी की है। इतना ही नहीं, मराठा आरक्षण से एलर्जी रखने वाली हिंदुत्ववादी संगठनों ने इस ओर देखना भी मुनासिब नहीं समझा। लेकिन, अपना बड़ा भाई भूखा और प्यासा न रहे, इसलिए मराठा बंधुओं की मदद के लिए छोटा भाई मुस्लिम समाज मुंबई के आजाद मैदान पर दौड़ा आया और इस समाज ने मस्जिद व मदरसों के दरवाजे खोलकर हजारों मराठा बंधुओं के लिए भोजन और पानी की व्यवस्था की।

संघर्ष योद्धा मनोज जरांगे पाटील के नेतृत्व में मराठा आरक्षण की मांग के लिए मुंबई के आजाद मैदान पर चल रहे ऐतिहासिक आंदोलन के कारण मुंबई में चक्काजाम हो गया, जिससे महाराष्ट्र हिल गया और सरकार के भी होश उड़ गए। लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलन कर रहे मराठा बंधुओं के लिए सरकार को आंदोलन स्थल पर भोजन, पानी और सभी प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए थीं। लेकिन खाने-पीने की तो छोड़िए, वहां साधारण शौचालय की भी व्यवस्था नहीं की गई। इस तरह चारों ओर नाकेबंदी कर इस आंदोलन को सफल न होने देने के लिए सरकार ने मराठों का हाल बेहाल कर दिया। उल्लेखनीय है कि केवल मुस्लिम विरोध के कारण हिंदुत्व का ढोल पीटने वाले और मराठा आरक्षण से एलर्जी रखने वाले किसी भी हिंदुत्ववादी संगठन ने इस आंदोलन की ओर देखना तक नहीं चाहा। इससे इन नकली हिंदुत्ववादियों का असली चेहरा सामने आ गया। लेकिन अपने बड़े भाई मराठा समाज का दुख न देख पाने के कारण छोटा भाई मुस्लिम समाज सब्जी, भाकरी और पानी लेकर मुंबई के आजाद मैदान पर अपने बड़े भाई की मदद के लिए दौड़ा आया। इतना ही नहीं, मुस्लिम बहनों ने भी सब्जी और भाकरी तैयार कर हजारों मराठा बंधुओं के भोजन की व्यवस्था की। मुस्लिम समाज ने यह दृढ़ निश्चय व्यक्त किया कि जब तक जरांगे पाटील का आंदोलन सफल नहीं होता और जब तक मराठा समाज को न्याय नहीं मिलता, तब तक वे मराठा बंधुओं का मजबूती से साथ देंगे।

मुस्लिम समाज हमेशा मराठा बंधुओं के साथ मजबूती से खड़ा

इससे पहले भी, जब-जब संघर्ष योद्धा मनोज जरांगे पाटील के नेतृत्व में मराठा आरक्षण के लिए आंदोलन हुए, तब-तब मुस्लिम समाज मराठा बंधुओं के साथ मजबूती से खड़ा रहा। मुस्लिम समाज ने अपने प्रार्थना स्थल, मस्जिद और मदरसों के दरवाजे मराठा बंधुओं के लिए खोल दिए और उनके लिए अल्पाहार, चाय-पानी और रहने की व्यवस्था की। इतना ही नहीं, उन्होंने आंदोलन में प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा लेकर मराठा आरक्षण को खुला समर्थन दिया।

मराठा समाज में तीव्र आक्रोश!

मुस्लिम समाज का बहिष्कार करें, उनकी दुकानों से सामान न खरीदें, उनका मतदान का अधिकार छीन लें, इस तरह की साजिश रचकर हिंदू और मुस्लिम समाज के बीच जहर बोने और दोनों समुदायों के बीच खाई पैदा करने की कोशिश करने वाले हिंदुत्ववादी संगठनों के किसी भी पदाधिकारी ने संघर्ष योद्धा मनोज जरांगे पाटील के आंदोलन स्थल पर जाकर उनकी खैर-खबर तक नहीं ली। इससे मराठा समाज में तीव्र आक्रोश व्यक्त किया जा रहा है और हमेशा मराठा बंधुओं की मदद के लिए दौड़कर आने वाले मुस्लिम समाज का दिल से आभार व्यक्त किया जा रहा है।

सुप्रिया सुळे को मराठा प्रदर्शनकारियों ने घेरा; गाड़ी पर बोतलें फेंकी गईं

जमीर काजी मुंबई, :

पिछले तीन दिनों से आजाद मैदान पर आंदोलन के लिए जमा हुए मराठा कार्यकर्ताओं का अब धैर्य टूटता नजर आ रहा है। रविवार दोपहर को राष्ट्रवादी कांग्रेस शरद पवार समूह की नेता सांसद सुप्रिया सुळे को कुछ प्रदर्शनकारियों के गुस्से का सामना करना पड़ा। संघर्ष योद्धा मनोज जरांगे-पाटील से आंदोलन स्थल पर मुलाकात करने के बाद लौटते समय कुछ लोगों ने उन्हें घेर लिया। जब वे अपनी गाड़ी में बैठकर जा रही थीं, तब शरद पवार और अजित पवार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए वाहन की दिशा में पानी की बोतलें फेंकी गईं। इससे तनावपूर्ण माहौल बन गया। इस बीच, सुप्रिया सुळे ने जरांगे से मुलाकात के बाद मांग की कि राज्य सरकार को आंदोलन के मुद्दे को हल करने के लिए तत्काल एक दिन का विशेष सत्र बुलाना चाहिए। सुप्रिया सुळे आज दोपहर करीब ३:४५ बजे आजाद मैदान पहुंचीं और उपवास कर रहे मनोज जरांगे से मुलाकात की। उनके साथ कुछ देर चर्चा करने के बाद, उनकी सेहत का ध्यान रखने की विनती करते हुए वे वहां से लौट रही थीं। जब वे अपनी गाड़ी की ओर जा रही थीं, तब रास्ते में कुछ प्रदर्शनकारियों ने उन्हें घेर लिया और उनसे बात करने की कोशिश की। कुछ लोगों ने गाड़ी का दरवाजा खोलकर उन्हें अंदर बिठाया। इसके बाद, जब गाड़ी जा रही थी, कुछ लोग पीछे दौड़ते हुए पानी की बोतलें फेंकने लगे। एक व्यक्ति ने शरद पवार और अजित पवार ने मराठों का बुरा हाल किया, ऐसा नारा लगाते हुए गाड़ी के पीछे दौड़ा। इससे कुछ देर के लिए अफरा-तफरी मच गई और तनावपूर्ण माहौल बन गया।

विशेष सत्र बुलाकर निर्णय लें: सुप्रिया सुळे जरांगे से मुलाकात के बाद सुप्रिया सुळे ने मीडिया से बात करते हुए कहा, आपके पास २५० विधायक हैं, अगर वास्तव में काम करना है तो उसे क्यों नहीं करते? मैं महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री और दोनों उपमुख्यमंत्रियों से हाथ जोड़कर विनम्रता से अनुरोध करती हूं कि तत्काल सर्वदलीय बैठक बुलाएं। इसके बाद तुरंत एक दिन का विशेष सत्र बुलाएं और इस मुद्दे को हल करें। सभी लोग यहां मिलने आ रहे हैं। किसी का विरोध नहीं है। इसलिए मुख्यमंत्री को तत्काल मंत्रिमंडल की बैठक बुलानी चाहिए और आरक्षण का निर्णय पारित करना चाहिए। फडणवीस पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा, जिन्होंने पार्टी तोड़ी, घर तोड़े और सत्ता हासिल की, उन्हें अब समाज के मुद्दों का समाधान करना चाहिए और तुरंत निर्णय लेना चाहिए। यह सत्ता केवल लाल बत्ती की गाड़ी में बैठने के लिए नहीं है, उन्होंने यह तंज भी कसा।

बुलंद यूनाइटेड एफसी बना बीड जिला डीएफए साखळी मैचों का सिकंदर

बीड (प्रतिनिधि) - शहर के छत्रपती शिवाजी महाराज क्रीडांगण पर आयोजित बीडीएफए के फाइनल मैच में बुलंद यूनाइटेड एफसी ने मिलन बॉयज को ११वें सडन डेथ पेनल्टी शूटआउट में हराकर बीड जिला डीएफए साखळी मैचों का सिकंदर बन गया।

इस टूर्नामेंट के साखळी मैचों में बुलंद यूनाइटेड एफसी ने मिलन बॉयज को ३-० से हराया। बुलंद यूनाइटेड एफसी ने बालेपीर एफसी को २-१ से हराया। बुलंद यूनाइटेड एफसी ने एल आर डी गेवराई को ९-० से हराया।

इस टूर्नामेंट के आखिरी दिन, यानी २७ अगस्त २०२५ को खेले गए सेमीफाइनल मैच में बुलंद यूनाइटेड एफसी ने सरकार एफसी पाटोदा को ४-१ से हराया। वहीं, फाइनल मैच में बुलंद यूनाइटेड एफसी और मिलन बॉयज ने ०-० की बराबरी की, लेकिन ११वें सडन डेथ पेनल्टी शूटआउट में बुलंद यूनाइटेड एफसी विजेता बना।

इस टूर्नामेंट में सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में जाफर हुसैनी, सर्वश्रेष्ठ स्कोरर के रूप में जाफर हुसैनी, और सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर के रूप में फिरदौस खान को चुना गया।

फाइनल मैच के विजेता का फैसला होने के बाद आयोजित समारोह में अध्यक्ष आफताब शेख, सचिव अल्ताफ शेख, उपाध्यक्ष सय्यद इनायतुल्ला, संयोजक सय्यद अर्शियान-उल्ला के साथ-साथ बुलंद यूनाइटेड मल्टीपर्पज फाउंडेशन के सभी सदस्य और परिवार, और बुंदेलपुरा मित्र मंडल बीड की ओर से विजेता, उपविजेता और सभी प्रतिभागी टीमों के खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी गईं।

जमीयत उलेमा ए हिंद जलगांव की कार्यकारिणी का ऐलान।

मौलाना नूरमोहम्मद इशाती अध्यक्ष और रागिब अहमद जनरल सेक्रेटरी पद पर चुने गए।

जलगांव संवाददाता

जमीयत उलेमा ए हिंद महाराष्ट्र के सदर हाफिज नदीम सिद्दीकी साहब की सदारत में भुसावल में जमीयत उलेमा ए हिंद जलगांव जिला की बैठक संपन्न हुई।जिसमें जलगांव जिले से उलेमाओं ने शिरकत की।जहां मौलाना नूरमोहम्मद इशाती साहब को अध्यक्ष चुन लिया गया।

२)नायब सदर मौलाना इमरान साहब जामनेर,अनीस किफायती भुसावल,

३)जनरल सेक्रेटरी रागिब अहमद

सेक्रेटरी हाजी अल्ताफ शेख भड़गाव ,मौलाना फिरोज उरूजी बोदवड़

४) ख़ाजिन कारी जाहिर भुसावल इनका इंतेखाब किया गया।तथा ३१ सदस्य चुने गए।

मायना शफीक साहब कन्वीनर जमीयत उलेमा ए हिंद महाराष्ट्र मौलाना अहद मिल्ली मौजूद थे। जमीयत उलेमा ए हिंद १०८ साल पुरानी उलेमाओं की तंजीम है।जिसका जंगे आजादी में अहम किरदार निभाया है।

दैनिक भारत की तामीर अखबार के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक काजी मखदूम शफीउद्दीन ने आरएम प्रिंटरर्स, बार्शी रोड, बीड 431122 महाराष्ट्र में मुद्रित कर के दैनिक तामीर, नगर परिषद परिसर, बशीर गंज, बीड, महाराष्ट्र कार्यालय से प्रकाशित किया है। मोबाइल : 9270574444 ईमेल : hinditameer@gmail.com वेबसाइट : www.dailytameer.com

daily Bharat ki tameer newspaper owner printer publisher editor Quazi makhdoom shafiuddin has printed at RM printers barshi road beed 431122 Maharashtra at published at office daily tameer nagar parishad complex Bashir gunj beed Maharashtra. Mobile : 9270574444 Email : hinditameer@gmail.com Website : www.dailytameer.com